بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-17.05.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

रजीअ नामक युद्ध के संदर्भ में आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय तथा सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन के इश्क़ एवं वफ़ा तथा बलिदानों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 17 मई 2024. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- सिर्या रजीअ का वर्णन हो रहा था, उसकी और अधिक जानकारी हदीस तथा इतिहास में जो बयान हुई है वह इस प्रकार है। सही बुख़ारी में रजीअ युद्ध के विषय में लिखा है कि रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस आदमी सिर्ये के रूप में स्थिति की जानकारी लेने के लिए भिजवाए तथा उन पर हज़रत आसिम बिन साबित अंसारी रज़ी. को अमीर नियुक्त फ़रमाया। उन मुसलमानों का सामना विरोधी क़बीले बनू लहयान के तीर चलाने वाले दल से हुआ जिनकी संख्या दो सौ थी। मुसलमान उन्हें देख कर एक टीले पर शरण लेने के लिए चढ़ गए। विरोधियों ने उन्हें शरण देने तथा हत्या न करने का विश्वास दिलाया। सिर्ये के अमीर हज़रत आसिम बिन साबित अन्सारी रज़ी. ने कहा कि जहाँ तक मेरा सम्बंध है, मैं किसी काफ़िर की शरण नहीं लूँगा। फिर उन सबने दुआ की- ऐ ख़ुदा, हमारे हालात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचा दे। काफ़िरों ने उन पर तीर चलाए तथा हज़रत आसिम रज़ी. सहित सात सहाबी शहीद हो गए।

तीन आदमी उनकी शरण के प्रस्ताव पर नीचे उतर आए। विरोधियों ने उन तीनों को पकड़ लिया तथा रस्सियों से बाँध दिया। उन तीनों में से एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ी. ने कहा कि यह पहला प्रतिज्ञा भंग है जो तुमने किया है, बख़ुदा मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा। इस पर काफ़िरों ने पहले उन्हें विवश किया तथा जब वे न माने तो उन्हें भी वहीं शहीद कर दिया। दो सहाबी हज़रत ख़ुबैब रज़ी.

तथा हज़रत ज़ैद बिन दसना रज़ी. शेष रह गए। काफ़िरों ने उन्हें ले जाकर मक्का में बेच दिया। हज़रत ख़बैब रज़ी. को बनू हारिस बिन आमिर बिन नौफिल बिन अब्दे मुनाफ़ ने ख़रीद लिया। यद्यपि बुख़ारी की रिवायत के अनुसार तो दस सहाबियों की यह पार्टी जासूसी के लिए ही थी तथा छिपते छिपाते जा रही थी कि यसरब की ख़जूरों की गुठलियों को पहचान कर एक महिला ने शोर मचा दिया तथा शत्रु ने उन पर हमला कर दिया। परन्तु अधिकांश सीरत लिखने वाले बयान करते हैं कि यह पार्टी आस पास के हालात का निरीक्षण करने के लिए तय्यार ही थी, अभी गई नहीं थी कि आने वाले दल के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी पार्टी को रवाना कर दिया।

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने भी विभिन्न इतिहास की किताबों से जो कुछ ग्रहण किया और यही बयान फ़रमाया कि बुख़ारी अथवा जिन सीरत की पुस्तकों में उनके छिप कर यात्रा करने का वर्णन है, वह रावियों की गलती लगती है क्यूँकि अब इस पार्टी को छिपने की आवश्यकता नहीं थी बल्कि अब तो यह अज़्ल तथा क़ारा के लोगों के साथ जा रहे थे, हाँ यह अवश्य अनुमान लगाया जा सकता है कि जब ये असफ़ान तथा मक्का के बीच पहुंचे तो अज़ल तथा क़ारा के लोगों ने जो वास्तव में एक षड्यन्त्र की योजना के अंतर्गत इन लोगों को लेकर आए थे, यहाँ पहुंच कर उन्होंने वादा तोड़ते हुए तथा पहले से निश्चित योजना के अंतर्गत बनू लहयान को सूचित कर दिया होगा तथा वे दो सौ हमला करने वाले सैन्य दल को साथ लेकर वहाँ पहुंच गए, अल्लाह ही बेहतर जानता है।

हज़रत आसिम के दलेरी से लड़ कर शहादत का सौभागय पाने का भी विवरण सविस्तार मिलता है। आप रज़ी. पहले तीरों से दुशमन का मुक़ाबला करते रहे, जब तीर समाप्त हो गए तो भाले से दुशमन पर वार करते रहे। जब भाला भी टूट गया तथा केवल तलवार शेष रह गई तो तलवार से दुशमन का मुक़ाबला किया तथा जब आपको अपन शहीद होने का आभास होने लगा तो आप रज़ी. को अपने कपड़ों की चिंता हुई क्यूँकि काफ़िर जिसको शहीद करते, उसके शव को कुचलते तथा नंगा कर दिया करते थे। आप रज़ी. ने ख़ुदा से दुआ की- ऐ अल्लाह, मैंने दिन के पहले भाग में तेरे दीन की रक्षा की है। अतएव दिन के दूसरे भाग में तू मेरे कपड़ों की रक्षा करना कि नंगा न हो जाऊँ। इसके बाद आप रज़ी. शहीद हो गए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इस घटना का वर्णन करते हुए लिखा है कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिफ़र के महीने 4 हिजरी में अपने दस साथियों की एक पार्टी तय्यार की तथा उन पर आसिम बिन साबित रज़ी. को अमीर नियुक्त फ़रमाया तथा उनको यह आदेश दिया कि गुप्त रूप से मक्का के निकट जाकर क़ुरैश के विषय म जानकारी प्राप्त करें तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना दें।

हज़रत आसिम रज़ी. ने चूँकि एक बड़े मुशरिक सरदार का वध किया था इस लिए जब मक्का के क़ुरैश को यह सूचना मिली कि शहीद होने वालों में आसिम बिन साबित रज़ी. भी शामिल हैं तो उन्होंने हज़रत आसिम रज़ी. का सिर अथवा शरीर का कोई अन्य भाग लेने के लिए कुछ लोगों को रवाना किया। हज़रत आसिम रज़ी. ने जिस सरदार का वध किया था उसकी माँ ने यह संकल्प किया था कि मैं अपने बेटे के हत्यारे की खोपड़ी में शराब डाल कर पियूँगी। परन्तु ख़ुदा का करना ऐसा हुआ कि जब ये लोग हज़रत आसिम रज़ी. के शव के निकट पहुंचे तो क्या देखा कि उनके शव पर ज़म्बूरों तथा शहद की मक्खियों ने डेरे डाल रखे हैं। उन्होंने मक्खियों तथा ज़म्बूरों को हटाने का भरसक प्रयास किया परन्तु वे न हटीं। अन्ततः वे लोग असफल एवं निराश होकर लौट गए। इसके बाद जल्द ही बारिश का एक तूफ़ान आया तथा आसिम के शव को वहाँ से हटा कर कहीं का कहीं ले गया।

हज़रत आसिम रज़ी. जब मुसलमान हुए थे तो उन्होंने क़सम खाई थी कि भविष्य में मुशरिकों की हर एक प्रथा से दूर रहेंगे यहाँ तक कि कभी किसी काफ़िर को स्पर्श भी न करेंगे। जब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी. को आसिम रज़ी. की शहादत तथा इस पूरी घटना का पता चला तो उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अपने बन्दे के संकल्प का कैसा ध्यान रखता है। आसिम रज़ी. ने क़सम खाई थी कि कभी किसी काफ़िर को स्पर्श नहीं करेंगे तथा अल्लाह तआला ने मौत के बाद भी उनकी इस क़सम का पास रखा तथा काफ़िरों को उन्हें छूने नहीं दिया।

अन्य सहाबी भी बड़ी दलेरी से लड़ते लड़ते शहीद हुए तथा अन्त में तीन सहाबी शेष रह गए जिनमें हज़रत ख़ुबैब रज़ी, हज़रत ज़ैद बिन दसना रज़ी. तथा हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ी. शामिल थे। दुश्मना ने इन तीनों सहाबियों स पहले वादा दिया कि वे उन्हें कुछ नहीं कहेंगे तथा जब उन्होंने स्वयं को उनके हवाले कर दिया तो काफ़िरों ने वादा तोड़ दिया। अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ी. की शहादत के बाद उनके विरोधियां ने रुपए के लालच में ख़ुबैब रज़ी. तथा इब्ने दसना को मक्के में बेच दिया। ख़ुबैब रज़ी. को हारिस बिन आमिर बिन नौफ़िल के लड़कों ने ख़रीदा, क्यूँकि ख़ुबैब रज़ी. ने बदर के युद्ध में हारिस की हत्या की थी जबकि ज़ैद दसना रज़ी. को सफ़वान बिन उमय्या ने ख़रीद लिया।

जब हज़रत ज़ैद बिन दसना रज़ी. को शहीद करने के लिए लाया गया तो अबू सुफ़यान बिन हरब ने उनसे कहा कि ऐ ज़ैद! मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ, क्या तू यह पसन्द करता है कि तेरी जगह हमारे पास मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हों तथा हम तेरी जगह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की गर्दन मार दें और तू अपने परिवार में रहे। हज़रत ज़ैद रज़ी. ने कहा- अल्लाह की क़सम, मुझे इतना भी पसन्द नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस समय जिस मकान में हैं वहाँ उनको कांटा भी चुभे तथा वह उन्हें पीड़ा दे तथा मैं अपने परिवार में रहूँ। इस पर अबू सुफ़यान ने कहा कि मैंने लोगों में से किसी को नहीं देखा कि वह किसी से ऐसा प्रेम करता हो जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मुहब्बत करते हैं। फिर इब्ने

अकूअ ने वर्णन किया है कि ख़ुबैब रज़ी. तथा ज़ैद रज़ी. दोनों एक ही दिन शहीद किए गए थे। जिस दिन ये दोनों शहीद किए गए उस दिन सुना गया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे कि अलैकुमस्सलाम, अर्थात तुम दोनों पर भी सलामती हो।

हज़रत ख़ुबैब रज़ी. के साथ हारिस के लड़कों ने बड़ा बुरा व्यवहार किया। हज़रत ख़ुबैब रज़ी. ने उन्हें कहा कि कोई प्रतिष्ठावान क़ौम कभी अपने क़ैदी के साथ इस प्रकार का व्यवहार नहीं करती। काफ़िरों पर इस बात का प्रभाव हुआ तथा उन्होंने इसके बाद उनके साथ अच्छा सलूक करना शुरु कर दिया। जब हज़रत ख़ुबैब रज़ी. क़ैद में थे तो एक दिन एक बच्चा उनके पास आ गया। ख़ुबैब के हाथ में उस समय उस्तरा था। आप रज़ी. न उस बच्चे को ले लिया। यह देख कर उसकी माँ डर गई कि कहीं ख़ुबैब रज़ी. उस बच्चे को हानि न पहुंचाएँ। हज़रत ख़ुबैब रज़ी. ने उस महिला के चेहरे पर भय देखा और कहा कि तुम डरतो हो कि मैं इस बच्चे को कष्ट दूँगा? बख़ुदा! मैं तो ऐसा नहीं हूँ।

वह महिला कहा करती थी कि मैंने कभी ऐसा क़ैदी नहीं देखा जो ख़ुबैब रज़ी. से अच्छा हो, मैंने एक दिन उन्हें देखा था कि अंगूर का गुच्छा उनके हाथ में था और वे उस खा रहे थे तथा वे ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे तथा उन दिनों मक्के में कोई भी फल नहीं था। यह अल्लाह की ओर से जीविका थी जो ख़ुबैब रज़ी. को दी गई थी।

जब क़ुरैश उन्हें शहीद करने के लिए हरम से बाहर ले गए तो उन्होंने दो रकअत नमाज़ अदा करने की आज्ञा चाही। उन्होंने उन्हें अनुमति दे दी। ख़ुबैब रज़ी. ने नमाज़ पढ़ी और कहा कि मैंने इस विचार से कि तुम कहोगे कि मैं घबराहट के कारण देर करता हूँ, यह नमाज़ छोटी पढ़ी है। फिर उन्होंने अपने ख़ुदा से दुआ मांगी तथा यह कहा कि ऐ अल्लाह इन, अर्थात दुश्मनों को एक एक करके नष्ट कर दे। हज़रत ख़ुबैब रज़ी. ने शेअर भी पढ़े जिनका अथ ह कि जब मैं मुसलमान होने की अवस्था में मारा जा रहा हूँ तो मुझे कोई चिंता नहीं कि किस करवट अल्लाह के लिए गिरूँगा और मेरा यह गिरना अल्लाह की ज़ात के लिए है और यदि वह चाहे तो टुकड़े किए हुए शरीर के जोड़ों को बरकत दे सकता है। इसके बाद काफ़िरों ने आप रज़ी. को अत्यंत निर्दयता के साथ शहीद कर दिया।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिननस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि उन लोगों की यह मौत स निर्भय होने की भावना थी, बलिदान थे, ये सहाबा रज़ी. इस्लाम के लिए हर समय प्राणों की बलि देने के लिए तय्यार रहने वाले थे। इस सिरये का अभी वर्णन हागा जो आईन्दा बयान कर दूँगा, इन्शाअल्लाह।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131